शोध मंथन Vol. XVI No.2 Apr.- June. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.49

राजस्थानी चित्रशैली में धार्मिक पक्ष

प्राप्तिः 10.04.2025
स्वीकृतः 25.05.2025

49

आकाश तोमर
एम. ए. (चित्रकला)
डी. ए. वी. डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर
ईमेलः akashtomar1972@gmail.com

सारांश

भारतीय चित्रकला में धार्मिक पक्ष प्राचीन काल से ही सृजन के रूप में प्रतिष्ठत है। मेरी आरम्भिक रूचि बचपन से ही चित्रकला के धार्मिक पक्ष की ओर रही है। क्योकि मैने अपनी दादी श्री को विभिन्न उत्सवों पर चित्रकला के धार्मिक पक्ष को चित्रित करते हुये देखा था। उस समय मैं अबोध था वे चित्र मेरे लिए केवल आकर्षण का केन्द्र थे। धीरे धीरे मैने देखा कि जीवन के प्रत्येक पक्ष में ये चित्र विविध रूपों में विधमान है तो मेरी जिज्ञासा और प्रबल होकर उभरी और मैने इन पूर्वा ग्रह को अभिप्राय के रूप में भारतीय चित्रकला के विभिन्न कालों में देखा तथा मुझे आभास हुआ कि मानों मैने भारतीय चित्रकला के उस पक्ष को निकटता से देखा, जो संजीव है और जिसका आधार सत्यं शिवं सुन्दरं है।

आरम्भ से ही भारतीय चित्रकला में धार्मिक पक्ष की क्षमता को मैने विभिन्न काल–क्रम के आधार पर निकटता से देखा है और यह निष्कर्ष निकाला है कि प्रत्येक काल में ये धार्मिक पक्ष अपना स्थायित्व रखते है। लेकिन राजस्थानी चित्रशैली में इनकी व्यापकता मुझे ठोस रूप में मिलती है। राजस्थान के जन जीवन में धार्मिक पक्ष का जिस सुदृड़ता से चित्रित किया गया है। वैसे अन्य शैली में प्राप्त नहीं होता। भारतीय चित्रकला में राजस्थानी चित्रकला एक विषेश स्थान रखती है यह शैली 16वी शताब्दी में विकसित हुई और अपने विविध स्वरूपों में सम्पूर्ण राजस्थान के राजदरवारों तथा आम–जनों के जीवन में गहराई से समाई।

इतिहास साक्षी है। कि राजस्थान का गौरव शाली इतिहास यह स्पष्ट करता है कि राजस्थान के कलाकारो ने सदैव लोक जीवन को अभिप्राय के रूप में चित्रित किया है। विभिन्न उत्सवों, तीज त्यौहारों और संस्कारों के विभिन्न अभिप्रायों का चित्र के रूप में प्रतिष्ठित किया है। जिसमें धार्मिक पक्ष को बाहुलता के साथ चित्रित किया गया है क्योकि राजस्थान में बल्लभ सम्प्रदाय होने के कारण राधा कृष्ण की अनेक श्रृंगारिक लीलाओं को धार्मिक पक्ष के रूप में चित्रित किया गया है। मेवाड किशनगढ, कोटा बूंदी, जयपुर, बीकोनर, जोधपुर, व अलवर शैलियो में धार्मिक पक्ष को वाहुलता के साथ चित्रित किया गया है। प्रारम्भ में चित्रकला का उद्देश्य धार्मिक ग्रन्थों को चित्रित करने का था जिसमें रामायण, भागवत पुराण, गीत गोविन्द और सूरसागर जैसे ग्रन्थों का चित्र रूपान्तरण आम हो गया था परन्तु धीरे धीरे दरबारी जीवन ,राधा कृष्ण की लीलाओं और प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण भी शामिल होता चला गया।

राजस्थानी चित्रकला में धार्मिकता के साथ साथ सौन्दर्योत्कर्षण तथा आनन्दानुभूति के लिए चित्र में रेखा रंग आकृति भाव इन सब का ऐसा संयोजन जो एक दूसरे को उत्कर्ष करें। यही संगति है और इसका चित्रकला में वही स्थान है जो संगीत में लय और वादन में गति का है।[1]

राजस्थानी चित्रशैली का आधार भारतीय है विषय की दृष्टि से राजस्थानी चित्र शैली लोक जीवन की सरलता से प्रभावित है। इस शैली में कल्पना का सहारा अधिक लिया गया है।

आरम्भ में तो भित्ति से इसकी शुरूआत हुई है। यह शैली धार्मिक भक्ति श्रृंगारिक भावों से ओत प्रोत है। इसमें ग्रामीण जन जीवन कवित्वमय प्रेम, कल्पनाओं व धार्मिक भावनाओं तथा राधा कृष्ण की श्रृंगारिक लीलाओं का मादक चित्रण है।

राजस्थानी चित्र शैली में अलिप्रायों को धार्मिक स्वरूप मिला है। तथा चित्रों के प्रतीकात्मक चिन्हों का भी वाहुलता से चित्रण हुआ है। राजस्थानी चित्र शैलीयों में धर्म को प्रधान माना गया है। धार्मिक पक्ष के अन्तर्गत रीति रिवाज, पूजा अर्चना, लोकाभिरूप और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए कला पक्ष के साथ–साथ भाव पक्ष को भी समाहित किया गया है।

कला और धर्म का सदियों से सम्बन्ध रहा है कला ने धर्म को रूप प्रदान किया है तो धर्म ने कला को सात्विकता दी है। यही बात मेवाड़ के धार्मिक चित्र में दिखाई देती है। धार्मिक विषय वस्तु मेवाड़ चित्रशैली की जान रही है। मेवाड़ शैली के प्रारम्भिक चित्रों में जैन व हिन्दू धर्म का विशेष प्रभाव रहा है जिसमें विभिन्न धार्मिक दर्शन के साथ–साथ पशु पक्षियों का भी भावात्मक चित्रण हुआ है।

मेवाड़ शैली के एक चित्र में युवती शिवलिंग की पूजा करती हुई चित्रित की गई है। एक वृक्ष के नीचे शिवलिंग चित्रित किया गया है। उसी के पास एक वृषभ (बैल) भी चित्रित किया गया है। जो शिव जी के वाहन का प्रतीक है तथा एक कमण्डल भी बना है। वृक्ष को अंलकारिक रूप में दर्शाया गया है। चित्र की पृष्ठ भूमि में ऊचे ऊचे पहाड़ चित्रित किये गये है तथा एक अन्य युवती भी शिवलिंग के सामने खड़ी है। विषय वस्तु की दृष्टि से चित्र अति उत्तम है तथा विषय वस्तु के अनुरूप ही चित्र भूमि का विभाजन हुआ है। कलात्मक दृष्टि से चित्र तीन भागों में विभाजित है। प्रथम भाग में तीन पैडिया बनायी गयी है। जिनके मध्य में रेखीय तथा किनारों पर ज्यामितीय आलेखन बनाये गये है। चित्र के मध्य में युवती को शिवलिंग के सामने हाथ जोडे पूजा करते हुए चित्रित की गयी है। साथ की एक युवती पीछे की ओर खडी हुई है। इनके वस्त्रों पर सुन्दर आलेखन अभिप्राय बने हुये है चित्र के तीसरे भाग में प्रकृति का सुन्दर चित्रण हुआ है इनमें पहाड़, बादल आकाश तथा छोटे छोटे पौधे को बनाया गया है।

वाचस्पति गैरोला – पूर्व उद्धत पृ० सं०–29

राजस्थानी चित्रशैली में आलेखन पृ० सं०–133

डा0 जयसिंह नीरज राजस्थानी चित्रकला पृ० सं०–116

राधा कृष्ण वरिष्ठ मेवाड़ की चित्रांकन परम्परा पृ० सं०–51

प्रतापदित्य पाल – कोर्ट ऑफ इण्डिया पृ० सं०–237

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.49

वही दुसरे चित्र में जो मेवाड़ शैली का ही है युवती को सूर्य की पूजा करती चित्रित की गयी है। सूर्य को अर्द्धचित्रित किया गया है, चित्र को देखने से सुर्योदय का आभास स्वंय ही हो जाता है । युवती हाथों में जल पात्र लेकर सूर्य को जल अर्पित करती हुई चित्रित की गयी है तथा पास में पूर्ण कुम्भ भी बना है, जिसे पूर्ण घट, पूर्ण कुम्भ, पूर्ण कलश,मंगल घट आदि के रूप में भी जाना जाता है तथा भारतीय कला के अष्ट मांगलिक प्रतीको में से एक है। यह समृद्धि एवं उत्पत्ति का प्रतीक है जिसका विचार ऋग्वेदिक धर्म तक ले जाता हैं। पूर्ण कुम्भ भारतीय कला में अनेक प्रतीकात्मक रूप में अकित हुआ है। युवती के वस्त्रालंकार तथा आभूषणों को बडे ही कलात्मकता के साथ चित्रित किया गया है।

दुसरी ओर किशनगढ़ शैली में भी धार्मिक पक्ष को वाहुलता के साथ चित्रित किया गया है। एक चित्र में श्री कृष्ण गोवर्धन पर्वत को धारण किये हुये चित्रित किये गये है। पास में ही राधा व अन्य गोपियों भी चित्रित की गयी है। तथा पास में खड़ी गायों को भी चित्रित की गयी है नीचे की और एक युवक सामने हाथ जोड़े खड़ा है सामने एक ढाल व तलवार भी बनायी गयी है जिसपर ज्यामितीय आलेखन बने है। चित्र में पशुओ (गाय) का भावात्मक अंकन किया गया है। कृष्ण के साथ गाय भी श्रद्धा व भक्ति का विषय बन गयी है। चित्र में ऊपर की ओर पर्वत पर एक हाथी को भी चित्रित किया गया है जो सौन्दर्य का प्रतीक है तथा पर्वत पर वृक्षों को भी बनाया गया है जिससे वास्तविकता का आभास होता हैं। जयपुर चित्र शैली राजस्थान की उप शैली होने के कारण यहां पर भी धार्मिक पक्षों की बाहुलता है यहां एक धार्मिक चित्र में भगवान श्री कृष्ण व बलराम को त्रिशुल की पूजा करते हुये चित्रित किया गया है। अलंकारिक दृष्टि से त्रिशुल में जो सोन्दर्य तत्व विघमान है वह अलंकारिकता लिये हुये है। चित्र की पृष्ठ भूमि तथा अग्रभूमि में अलंकरण अभिप्राय चित्र की गरिमा को बढ़ाते है। त्रिशुल के दोनों और लाल व पीले वस्त्र को अलंकारिक रूप में बनाया गया है। त्रिशुल के दोनों और चक्र बने है। जो गति व सूर्य का प्रतिनिधित्व करते है। ऊपर दो स्वास्तिक चिन्ह अलंकारिक दृष्टि से चित्रित किये गये हैं जो चित्र की गरिमा को बढ़ा रहे है।

कोटा बूदी जोधपुर, बीकानेर आदि चित्र शैली में धार्मिक पक्षों के दर्शन होत है। बूंदी शैली में बंगाला शिवलिंग की पूजा करती हुई चित्रित की गयी है तथा एक चित्र में दुर्गा देवी दानवों का संहार

प्रतापादित्य पाल – कोर्ट पोन्टिग ऑफ इण्डिया पृ० सं०–238

वी0एस0 अग्रवाल – इण्डिया आर्ट पृ० सं०–51

राधाकृष्ण वरिष्ठ मेवाड़ की चित्राकन परम्परा पृ० सं०–5

करती हुई दिखायी गयी है यह चित्र दुर्गा सप्तशती पर आधारित है। बीकानेर शैली में भी धार्मिक पक्ष को बाहुलता के साथ चित्रित किया गया है यहां के चित्रों में रंगो की शुद्धता पर विशेष बल दिया गया है। यहां एक चित्र में पार्वती को शिवलिंग की पूजा करते हुये चित्रित किया गया है। पार्वती सुन्दर कालीन पर त्रिशुल को पकड़े खड़ी है वहीं दूसरे चित्र में दुर्गा देवी भैसासुर राक्षस का संहार करती हुई चित्रित की गयी है। बूंदी शैली के एक अन्य चित्र गजेन्द्र मोक्ष जो भागवतपुराण पर आधारित है। चित्र में समुद्र के अन्दर कुछ हाथियों को स्नान करते हुए दिखाया जा रहा है।

साथ ही एक मगरमच्छ को हाथी का पैर पकड़े हुए चित्रित किया गया है। साथ ही दो स्त्री आकृति बनी है, जो प्रतीकात्मक दृष्टि से चित्रित की गयी है। ऊपर की और गरूड़ पक्षी को अंकित किया गया है। प्राकृतिक दृष्टियों में सुन्दर वृक्षों के साथ–साथ ऊंची पाहडिया भी बनाई गयी है। सौन्दर्य व धार्मिक दृष्टि से चित्र उत्तम है। बूंदी शैली में धार्मिक एवं घरेलू जीवन को भी पशुओं के माध्यम से धार्मिक बनाने का प्रयास किया गया है।

कोटा चित्र शैली में भी अनेक धार्मिक चित्रों का चित्राकन हुआ है। चित्र सावरठिकाने में इन्द्र का प्रकोप चित्रित किया गया है। चित्र में चारो और हाहाकार मची है कुछ गाये भाग कर कृष्णा जी की ओर जा रही है चित्र में गति विघमान है तथा विषय की दृष्टि से उत्तम चित्र बना है।

अतः राजस्थान की चित्रकला अत्यंत आर्कषक व हदयग्राही है और समाज के सच्चे प्रतिबिम्ब और समकालीन प्रथाओं का अंकन राजस्थानी चित्रशैली की विशेषताएं रही है। कला समाज का दर्पण है और कलाकार एक सामाजिक प्राणी है यही कारण है कि वातावरण का प्रभाव उसके मानव पटल पर निरंतर पड़ता रहा है।

सन्दर्भ

1. वाचस्पति गैरोला
2. डा0 जयसिंह नीरज– राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य
3. राधा कृष्ण वशिष्ठ – मेवाड की चित्रांकन परम्परा
4. प्रतापदित्यपाल – कोर्ट पेंटिंग ऑफ इंण्डिया
5. वी0एस0 अग्रवाल – इण्डियन आर्ट

डा0 जयसिंह नीरज स्पलैण्डर ऑफ राजस्थान पेंटिंग और फल्ग पृ० सं०–10

डा0 बंद्रीनारायाण कोटा भित्ति चित्रांकन परम्परा पृ० सं०–8